कोरापट जिले में समग्र स्वच्छता प्राप्त करने में वोमेलसेल्फ हेल्प ग्रुप मेंबर्स का शामिल होना/साथ आना

कार्य निष्पादन संबंधी सारांश

<u>पृष्ठभूमि:-</u>

ओडीसा में घरेलू शौचालयों की उपलब्धता देश में सबसे कम है। 2011 की जनगणना के अनुसार केवल 14.1 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों के पास स्वच्छता की सुविधाएं हैं। 84.7 प्रतिशत परिवार खुले में शौच करते हैं, 30 जिलों में 2004 में लागू समग्र स्वच्छता अभियान (टीएससी) के सामने खुले में शौच करने की प्रवृत्ति को समाप्त करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। शौचालय बनाने से भी अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य उनके बदलते व्यवहार पर ध्यान देते हुए उन्हें इस ओर प्रवृत्त करना है।

जिलों में से एक जिले कोरापट में सबसे कम स्वच्छता कवरेज है। 2006 में पंचायती राज मंत्रालय द्वारा देश के 250 सर्वाधिक पिछड़े जिलों में इसकी गणना की गई है। 2011 की जनगणना के अनुसार कोरापट में केवल 8.2% ग्रामीण परिवारों के पास शौचालय की सुविधा है जो राज्य की औसत से बहुत कम है। कोरापट में 2010 में यूनिसेफ द्वारा अधिकृत नॉलेज एटीट्यूडएंड प्रैक्टिस(केएपी) के अध्ययन से पता चला है कि शौचालयों के निर्माण के बावजूद भी अधिकांश लोग इसका उपयोग नहीं कर रहे हैं। शौचालयों का उपयोग न करने के कारणों में से एक कारण ''पहले से चल रही प्रैक्टिस को बदलना कठिन'' बताया गया। इससे यह पता चला है कि बड़े स्तर पर समाज की आदतों/सोच को बदलने की आवश्यकता है। महिलाओं का अधिकार संपन्न बनाने की पहल-मिशन शक्ति, 2001 में ओडीसा की सरकार द्वारा शुरू की गई। इस पहल ने शिक्षा और सामाजिक एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधारों पर बल दिया। इसमें महिलाओं के स्वयं सहायता दलों (डब्ल्यूएसएचजीएस) की अभिवृद्धि शामिल है जिसके हिस्से के रूप में महिलाएँ विभिन्न विकास के बारे में पहल करने के लिए ग्रुपों में संगठित हैं। 2005 में कोरापट में 10,000 महिलाएँ,जो डब्ल्यूएसएचजीएस की सदस्यता कीं, को विभिन्न सामाजिक आर्थिक गतिविधियों में लगाया गया।

श्यामसुन्दर पुजारी का आईएचएचएल,
डीडब्ल्यूएसएम के बीआरजी सदस्य

मध्यस्थता(हस्तक्षेप)

इन डब्ल्यूएसएचजी ने स्वच्छता बढ़ाने के लिए समाज की प्रगति के साथ महिलाओं के सशक्तिकरण को जोड़ने के लिए विशेष अवसर प्रदान किया है। जिला जल एवं स्वच्छता मिशन (डीडब्ल्यूएसएम और मिशन शक्ति को यूनिसेफ को तकनीकी सहयोग से डब्ल्यूएसएचजी के माध्यम से स्वच्छता को आगे बढ़ाने के लिए एक विशेष कार्यक्रम में एक जगह लाया गया। डब्ल्यूएसएचजी को अधिकार देते हुए इस कार्यक्रम का उद्देश्य क्षमता बढ़ाकर और आवृत्ति(रिवोल्विंग) फंड उपलब्ध कराकर शौचालय के उपयोग को बढ़ावा देना है। समुदाय आधारित थियेटरों के माध्यम से संदेश देकर स्थानीय पर्वों पर संदेशों का प्रसारण करके और घर-घर में अभियान चलाकर इसे पूरा किया गया।

बांदागुड़ा महिला मंडल के एसएचजी सदस्य जल गुणवत्ता प्रतिक्रिया योजना तैयार कर रहे हैं।

दृष्टिकोण

पूरे जिले में उचित फैलाव को सुनिश्चित करने के लिए 14 ब्लाकों के प्रत्येक ब्लाक के लिए 3 डब्ल्यूएसएचजी का चयन किया गया, जिससे कुल 42 डब्ल्यूएसएचजी हो गए। प्रत्येक डब्ल्यूएसएचजी को लगभग 18-20 शौचालय बनाने के लिए डीडब्ल्यूएसएम द्वारा आवृत्ति(रिवोल्विंग) फंड के माध्यम से रू० 50,000/- की राशि उपलब्ध कराई गई। डब्ल्यूएसएचजी ने मेसन भी टीम सहित शौचालय निर्माण पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। शौचालयों के निर्माण एवं उसके उपयोग को बढ़ावा देने के लिए विविध प्लेटफार्मों,प्रदर्शनी के माध्यम से विभिन्न नीतियाँ जैसे घरों का दौरा करना, गाँव में बैठकें आयोजित करना और बातचीत करना, अपनाई गई। इसके अतिरिक्त आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं (एडब्ल्यूडब्ल्यू) को घरों के दौरों के दौरान समुदाय के सदस्यों के साथ विचार-विमर्श शुरू करने के लिए लगाया गया, ब्लाक रिसोर्स समन्वयकों(बीआरसी) ने डब्ल्यूएसएचजी के साथ मिलकर काम किया, प्रगति की समीक्षा करने के लिए नियोजित बैठकें आयोजित की गई तथा विभिन्न स्टेकाहोल्डरों को इकट्ठा किया गया और सरपंच ने समग्र मार्गदर्शन किया।

कार्यान्वयन प्रक्रिया को तीन वर्गों में बाँटा गया है:-

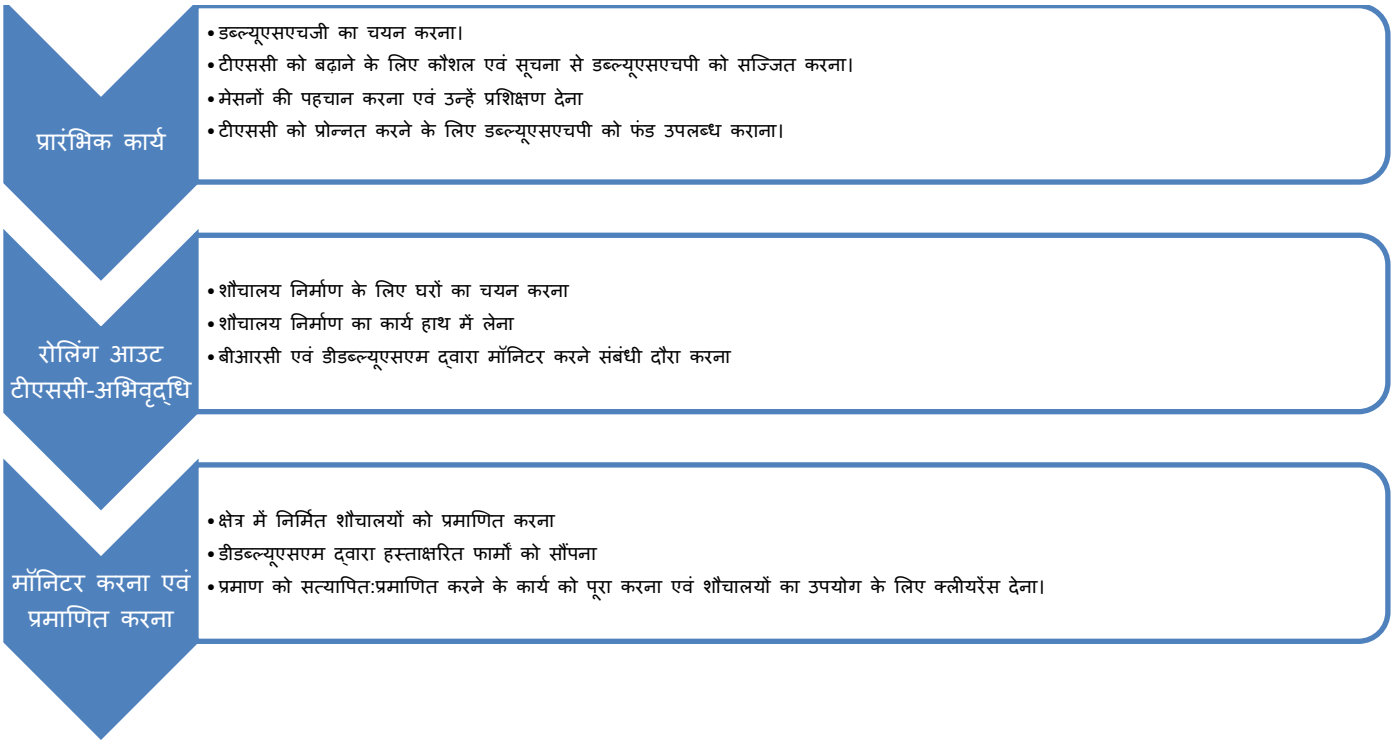

परिणाम

डीडब्ल्यूएसएम और मिशन शक्ति की सहभागिता निर्माण में समग्र प्रगति में योगदान किया है। मई, 2014 के अनुसार बीपीएल परिवारों के लिए 102, 383 वैयक्तिक घरेलू शौचालयों (आईएचएल) का निर्माण किया गया है जो लक्ष्य का 46 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त 98% स्कूलों में और 90 प्रतिशत आंगनवाड़ी केंद्रों में शौचालय हैं।

इस पहल ने कोरापट जिले में टीएससी के कार्यान्वयन की प्रक्रिया को सरल बनाने में सहयोग किया है। इसके फंड वितरण की प्रक्रिया को विकेंद्रित एवं सरलीकृत करने में सहायता की है तथा ग्राम पंचायत (जीपी) और डब्ल्यूएसएचजी के बीच बेहतर ताल-मेल में सहयोग किया है। डब्ल्यूएसएचजी को सक्रियता ने यह सुनिश्चित किया है कि उन्नत स्वच्छता प्रैक्टिसों और शौचालय निर्माण एवं उसके उपयोग की समग्र सुविधाओं को सफलतापूर्वक उपलब्ध कराया गया है। गाँव की 42 परियोजनाओं में से बांदीगुड़ा गाँव ने खुले में शौच मुक्त गाँव का स्टेटस प्राप्त किया है और शौचालय निर्माण के लक्ष्य को भी पूरा किया है। शेष गाँव के प्रशिक्षित डब्ल्यूएसएचजी कुछ चुनौतियों का सामना कर रहे हैं तथा शौचालयों के निर्माण एवं उनके उपयोग के लिए लोगों/समुदायों को तैयार कर रहे हैं।

रसोई घर को बांटकर आईएचएचएल का निर्माण किया

विषय की शिक्षा देना

इस पहल ने अंतर्दृष्टि एवं सीखने की प्रचुरता को उपलब्ध कराया है, जिसमें से कुछ का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:-

- ओडीएफ प्राप्त करने के लिए सामाजिक कार्यक्रम के उद्देश्य को सभी स्टेकहोल्डरों द्वारा समझना चाहिए क्योंकि कुछ डब्ल्यूएसएचजी ने इस विषय को आय का साधन समझा है तो कुछ अन्य ने इसे शौचालय निर्माण का।
- तकनीकी सहयोग एवं फालोअप को कठिन होना पाया गया। डब्ल्यूएसएचजी जिसने नियमित फालो-अप एवं तकनीकी सहयोग प्राप्त किया है, ने उनसे बेहतर कार्य किया है जिन्होंने इस सहयोग को लगातार प्राप्त नहीं किया।
- विकास की गतिशीलता में पोजीशन स्वच्छता में वृद्धि पहले ही डब्ल्यूएसएचजी जिसने सामूहिक विकास के परिणामों को पहले ही प्राप्त कर लिया था, सीमित अनुभव वालों की अपेक्षा सामूहिक स्वच्छता वृद्धि के लिए बेहतर कार्य किया है।
- सारे गाँवों को सवर करने की पूरी अवधारणा(एप्रोच) को सुनिश्चित करें। डिजाइन में केवल एक डब्ल्यूएसएचजी प्रतिगाँव शामिल है, जबकि किसी भी एक गाँव में एक से अधिक डब्ल्यूएसएचजी पाए जा सकते हैं।

इसके परिणाम स्वरूप कुछ डब्ल्यूएसएचजी को हटाया गया।

<u>बांदीगुड़ा गाँव</u>

ओडीएफ के लिए सामूहिक योजना बनाकर बांदीगुड़ा गाँव, खुदी ग्राम पंचायत, सिमिली गुड़ा ब्लाक ने खुले में शौच रहित गाँव का स्टेटस प्राप्त किया है। गाँव ने यह माना कि ओडीएफ को सभी घरों में शौचालय बनाकर ही प्राप्त किया जा सकता है। चूँकि सभी परिवार प्रोत्साहनों के पात्र नहीं थे, बीपीएल परिवारों के लिए आबंटित फंड को पूरे गाँव में बांट दिया गया। इस प्रकार यह सभी परिवारों के पास पहुंच गया। गाँव में जगह की कमी के कारण परिवारों ने नई पद्धति की जानकारी प्राप्त की और शौचालय रसोईघर के कोने में भी पाए गए।

पुन: प्रयोग की संभावना:

इस पहल को आगे बढ़ाने की सिफारिश की जा सकती है क्योंकि डब्ल्यूएसएचजी ने सामूहिक व्यावहारिक बदलाव लाने की अपनी योग्यता सिद्ध की है। ओडीसा राज्य ने राज्य में विशेष रूप से निर्मल भारत अभियान(एनबीए)- निर्मल ओडीसा अभियान(एनओए) दिशा-निर्देशों के कार्यान्वयन में इस अवधारणा को अंगीकार किया है। अन्य राज्य भी ऐसा करने पर विचार कर सकते हैं और एनबीए रोलआउट प्रक्रिया में डब्ल्यूएसएचजी को लगा सकते हैं।

एक तत्व जिसने शौचालय निर्माण के पक्ष में व्यापक रूप से कार्य किया है, में चयन प्रक्रिया में मानक मापदंडों का अनुपालन करते हुए डब्ल्यूएसएचजी का सही चयन किया हैं हैंडपिकिंग डब्ल्यूएसएचजी को शामिल किया जिसके सक्रिय सदस्य थे और समाज में जिनका आदर था, ने अपनी क्षमताओं का मूल्यांकन करते हुए उसे विशिष्ट प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध कराया। इन प्रयासों को शौचालय निर्माण की विभिन्न प्रकार की सामग्रियों से सज्जित ग्रामीण स्वच्छता मार्ट्स स्थापित करके और आगे बढ़ाया जा सकता है जिससे कि लोग स्वतंत्रता पूर्वक चयन कर सकें और अपनी शौचालय/स्वच्छता संबंधी आवश्यकताओं की योजना बना सकें।

एसएचजी सदस्यों की पीपलगुड़ा के अपने श्रमिकों के साथ सहयोग करते हुए